विशेष परिचय - अर्पण

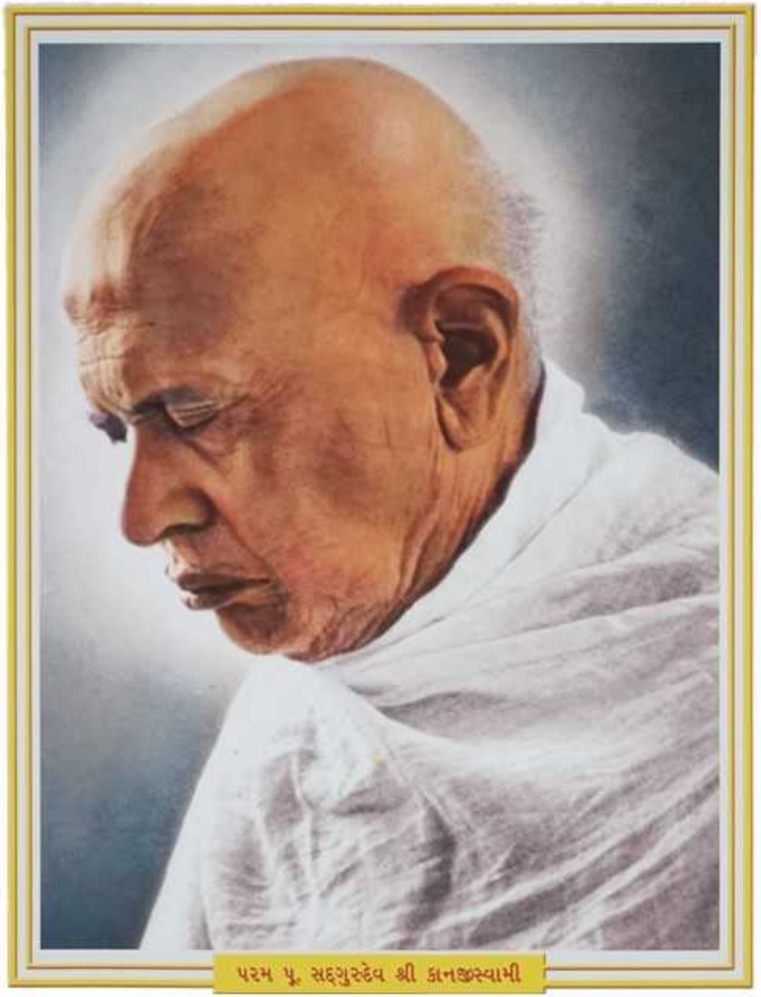

कल्याणमूर्तिश्रीसदगुरुदेवको
जिन्होंने इस पामर पर अपार उपकार किया है। जो स्वयं
मोक्षमार्ग में विचर रहे हैं और अपनी दिव्य श्रुतधारा
द्वारा भरतभूमि के जीवों को सतत्‌रूप से मोक्षमार्ग
दर्शा रहे हैं जिनकी पवित्र वाणी में मोक्षमार्ग के
मूलरूप कल्याणमूर्ति सम्यग्दर्शन का माहात्म्य
निरन्तर बरस रहा है और जिनकी परम कृपा से
यह ग्रन्थ तैयार हुआ है—ऐसे कल्याणमूर्ति
सम्यग्दर्शन का स्वरूप समझानेवाले
कल्याणमूर्ति श्री सद्‌गुरुदेव को यह
ग्रन्थ अत्यन्त भक्तिभाव से
अर्पण करता हूँ.....

– दासानुदास रामजी

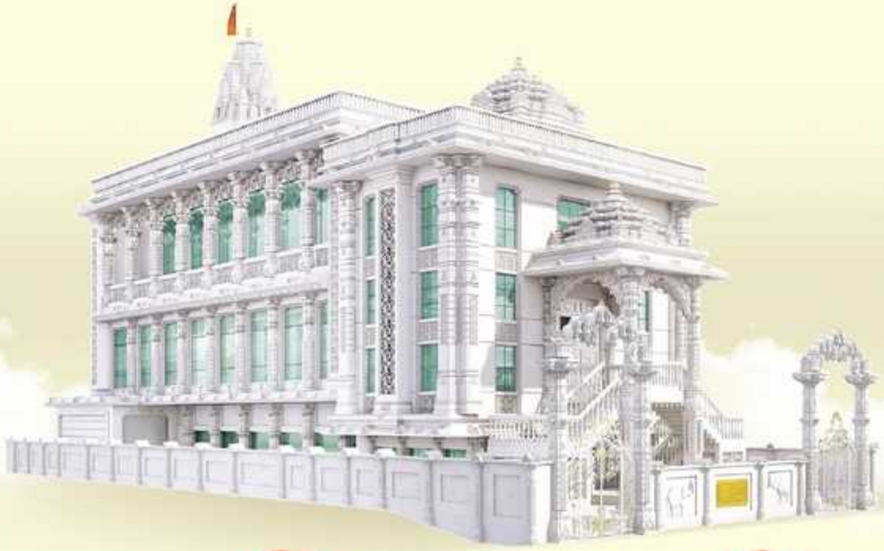

द्वितीय आध्यात्मिक महिला शिविर

महा सुद ८, वीर सं॰ २५४६; ०२-०२-२०२०

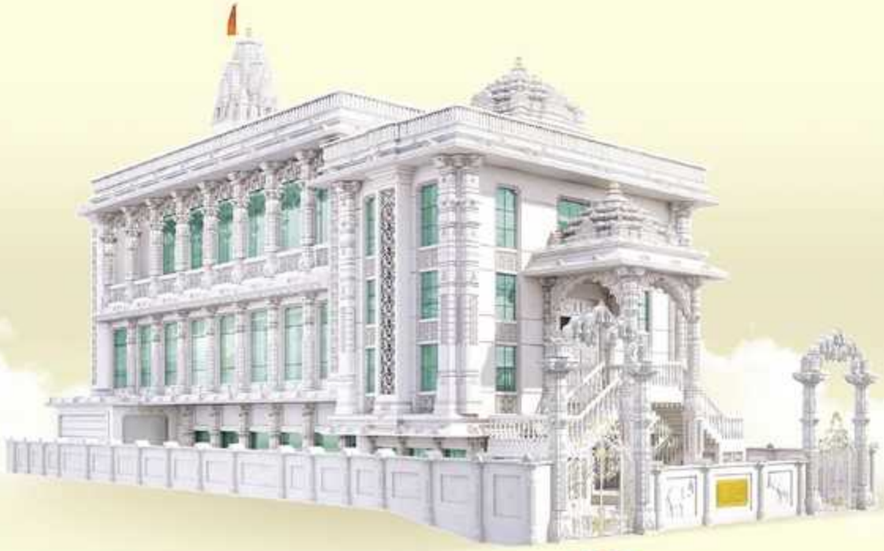

श्री महावीर भगवान की शासन परम्परा

५ भाव विषय का उद्योत

५ भाव विषय का उद्योत

- मूल - श्री सर्वज्ञ भगवान - श्री महावीर भगवान
- मूल सूत्र कर्ता - श्री कुंदकुंदाचार्य - श्री नियमसार - शुद्धभाव अधिकार - गाथा ४१
- मूल सूत्र कर्ता - श्री उमास्वामी आचार्य - श्री तत्त्वार्थसूत्र - अ॰ २ सू॰ १

५ भाव सम्बन्धी आज की चर्चा

- पू॰ गुरुदेवश्री - नियमसार - शुद्धभाव अधिकार - गाथा ४१ पर प्रवचन
- श्रीमती हर्षाबहिनजी - पू॰ गुरुदेवश्री के प्रवचन का स्पष्टीकरण
- ब॰ वासन्तीबहिनजी - तत्त्वार्थसूत्र के आधार से स्पष्टीकरण
- श्रीमती जयतिबहिनजी - तत्त्वार्थसूत्र के आधार से स्पष्टीकरण

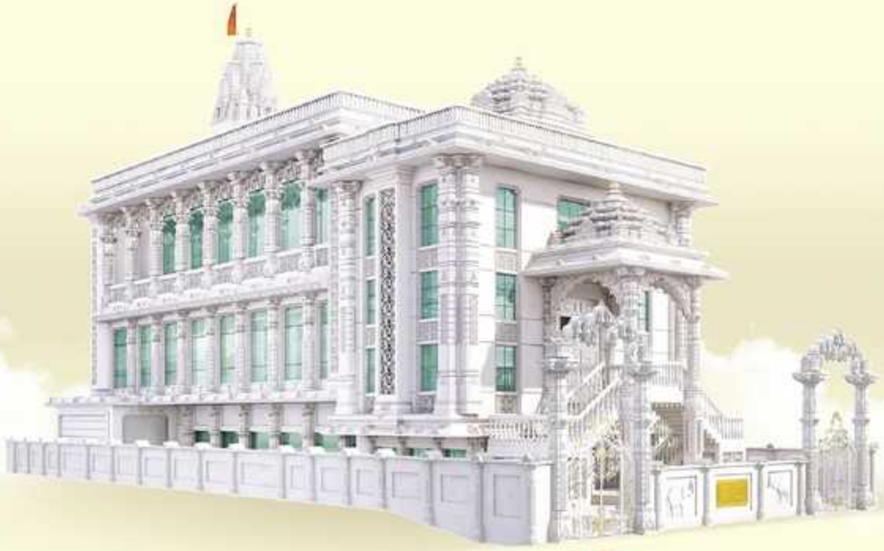

श्री महावीर भगवान की शासन परम्परा

तत्त्वार्थसूत्र का सामान्य परिचय

तत्त्वार्थसूत्र का सामान्य परिचय

जैन पुराणों की मंगलमय गाथा गाते है।
आचार्य परम्परा की अब लो कथा सुनाते है।।
सुनोजी मंगल जैन पुराण, यासो जीवन बने महान ...

जैन पुराणों की मंगलमय गाथा गाते है।
आचार्य उमास्वामी की अब कथा सुनाते है।।
सुनोजी मंगल जैन पुराण, यासो जीवन बने महान ... [२]

तत्त्वार्थसूत्र

सामान्य परिचय

तत्त्वार्थसूत्र - रचयिता: श्री उमास्वामी आचार्य

- यह संस्कृत भाषा में सर्व प्रथम जैन ग्रन्थ है।
- यह ग्रन्थ सूत्रात्मक शैली में लिखा गया है।
- जैन साहित्य का आदि सूत्र ग्रन्थ है।
- सूत्र-व्याकरण के अनुसार कम से कम शब्दों में अर्थ बता दे उसे सूत्र कहते है।
- तत्त्वार्थसूत्र की कई [२२] टीकाएँ है।

रचयिता: श्री उमास्वामी आचार्य

- कुन्दकुन्द आचार्य के पट्ट शिष्य
- काल: वीर निवार्ण सं॰ [५६५-६२९], विक्रम सं॰ [९५-१५९], [ईसवी [३९-१०३]] [१]
- प्राचीन जैनाचार्य अपने बारे में कुछ नहीं लिखते थे। अतएव आपके जीवन परिचय से जैन समाज अपरिचित है।

[१] जैनेन्द्र सिद्धान्त कोश १.३२८

तत्त्वार्थसूत्र - कई टीकाएँ

काल [ईसवी][1]	आचार्य का नाम	टीका का नाम	श्लोक प्रमाण
१२०-१८५	आचार्य समन्तभद्र	गंधहस्ति महाभाष्य	८४०००
५वीं शताब्दी	आचार्य पूज्यपाद	सर्वार्थसिद्धि	१२०००
६२०-६८०	आचार्य अकलंकदेव	तत्त्वार्थ राजवार्तिक	१६०००
७७५-८४०	आचार्य विद्यानन्दि	तत्त्वार्थ श्लोकवार्तिक	२००००
९०५-९५५	आचार्य अमृतचंद्र	तत्त्वार्थसार	६८६
[1] जैनेन्द्र सिद्धान्त कोश १.३२८	ओर कई आचार्यों की टीकाएँ है...		

काल [ईसवी]	विद्वान का नाम	टीका का नाम	श्लोक प्रमाण
१७९५-१८६७[2]	पं. सदासुखदासजी	अर्थप्रकाशिका	-
१८८१-१९८५	मु. रामजीभाई दोशी [टीका संग्रहकार]	मोक्षशास्त्र	-
[2] जैनेन्द्र सिद्धान्त कोश १.३२८	ओर कई विद्वानों की टीकाएँ है...		

शिविर के लिए आधार

- इस शिविर के लिए आधार *मु॰ रामजीभाई दोशी* द्वारा संग्रहित की गई *मोक्षशास्त्र* की टीका है।
- उचित स्थानों पर अन्य आवश्यक ग्रन्थ का आधार लिया जाएगा।
- समीचीन विद्वानों का उचित मार्गदर्शन लिया जाएगा।

तत्त्वार्थसूत्र

विशेष परिचय

शास्त्र के विषय

क्र॰	अध्याय	विषय	सूत्र संख्या
१॰	१	जीव तत्त्व	३३
२॰	२	जीव तत्त्व	५३
३॰	३	जीव तत्त्व	३९
४॰	४	जीव तत्त्व	४२
५॰	५	अजीव तत्त्व	४२
६॰	६	आस्रव तत्त्व	२७
७॰	७	आस्रव तत्त्व	३९
८॰	८	बंध तत्त्व	२६
९॰	९	संवर व निर्जरा तत्त्व	४७
१०॰	१०	मोक्ष तत्त्व	९
	१० अध्याय	कुल संख्या	३५७

शास्त्र के विषय - अध्यायों का विशेष स्वरूप

क्र॰	अध्याय	विषय	सूत्र संख्या
१॰	१	जीव तत्त्व	३३
२॰	२	जीव तत्त्व	५३
३॰	३	जीव तत्त्व	३९
४॰	४	जीव तत्त्व	४२
५॰	५	अजीव तत्त्व	४२
६॰	६	आस्रव तत्त्व	२७
७॰	७	आस्रव तत्त्व	३९
८॰	८	बंध तत्त्व	२६
९॰	९	संवर व निर्जरा तत्त्व	४७
१०॰	१०	मोक्ष तत्त्व	९
	१० अध्याय	कुल संख्या	३५७

शास्त्र के विषय - अध्यायों का विशेष स्वरूप - अध्याय २

- दूसरे अध्याय में ५३ सूत्र हैं;
- उसमें जीवतत्त्व का वर्णन है।
- जीव के पाँच असाधारण भाव,
- जीव का लक्षण
- तथा इन्द्रिय, योनि, जन्म, शरीरादि के साथ के सम्बन्ध का विवेचन किया है।

जीव के भाव [गुण] ओर कर्म

क्र॰	जीव के गुण	मूल कर्म प्रकृति	उत्तर कर्म प्रकृति
घातिकर्म			
१॰	दर्शन	दर्शनावरणीय	९
२॰	ज्ञान	ज्ञानावरणीय	५
३॰	श्रद्धा	मोहनीय	दर्शनमोहनीय [३]
४॰	चारित्र	मोहनीय	चारित्रमोहनीय [२५]
५॰	दान , लाभ , भोग , उपभोग , वीर्य	अंतराय	५
अघातिकर्म			
६॰	अव्याबाधत्व	वेदनीय	२
७॰	सूक्ष्मत्व	नाम	९३
८॰	अवगाहनत्व	आयु	४
९॰	अगुरुलघुत्व	गोत्र	२

तत्त्वार्थसूत्र

अध्याय २ सूत्र १

जीव के असाधारण भाव

औपशमिकक्षायिकौ भावौ मिश्रश्च
जीवस्यस्वतत्त्वमौदयिकपारिणामिकौ च ॥ १ ॥

जीव के असाधारण भाव

अर्थ - [जीवस्य] जीव के [औपशमिकक्षायिकौ] औपशमिक और क्षायिक [भावौ] भाव [च मिश्रः] और मिश्र तथा [औदयिक-पारिणामिकौ च] औदयिक और पारिणामिक, यह पाँच भाव [स्वतत्त्वम्] निजभाव हैं, अर्थात् यह जीव के अतिरिक्त दूसरे में नहीं होते।

भावों के भेद

द्विनवाष्टादशैकविंशतित्रिभेदाः यथाक्रमम् ॥२॥

अर्थ - उपरोक्त पाँच भाव [यथाक्रमम्] क्रमशः [द्वि नव अष्टादश एकविंशति त्रिभेदाः] दो, नव, अट्ठारह, इक्कीस और तीन भेदवाले हैं।

भावों के भेद

क्र॰	भाव	भेद	कर्म सापेक्ष व्याख्या
१॰	औपशमिक भाव	२	कर्म के उपशम के काल में होनेवाले जीव के भाव को औपशमिक भाव कहते है।
२॰	क्षायिक भाव	९	कर्म के क्षय के काल में होनेवाले जीव के परिणाम को क्षायिक भाव कहते है।
३॰	क्षायोपशमिक भाव	१८	कर्म के क्षयोपशम के काल में होनेवाले जीव के भाव को क्षायोपशमिक भाव कहते है।
४॰	औदयिक भाव	२१	कर्म के उदय के निमित्त से होनेवाले जीव के भाव को औदयिक भाव कहते है।
५॰	पारिणामिक भाव	३	कर्मोपाधि निरपेक्ष शुद्धभाव को पारिणामिक भाव कहते है।

तत्त्वार्थसूत्र

अध्याय २ सूत्र ३ - औपशमिकभाव

औपशमिकभाव की व्याख्या

आत्मा के पुरुषार्थ द्वारा अशुद्धता का प्रगट न होना, अर्थात् दब जाना; आत्मा के इस भाव को औपशमिकभाव कहते हैं। यह जीव की एक समयमात्र की पर्याय है, वह एक-एक समय करके अन्तर्मुहूर्त तक रहती है, किन्तु एक समय में एक ही अवस्था होती है; और उसी समय आत्मा के पुरुषार्थ का निमित्त पाकर जड़कर्म का प्रगटरूप फल जड़कर्म में न आना, वह कर्म का उपशम है।

औपशमिकभाव के दो भेद

सम्यक्त्वचारित्रे ॥३ ॥

अर्थ - [सम्यक्त्व] औपशमिकसम्यक्त्व और [चारित्रे] औपशमिकचारित्र—इस प्रकार औपशमिकभाव के दो भेद हैं।

औपशमिकभाव के दो भेद

क्र॰	भाव	जीव के गुण	गुणस्थान	कर्म
१॰	औपशमिक सम्यग्दर्शन	श्रद्धा	४-७ गुणस्थान	दर्शनमोहनीय और चारित्रमोहनीय कर्म का उपशम
२॰	औपशमिक चारित्र	चारित्र	११ गुणस्थान	चारित्रमोहनीय की २१ प्रकृति का उपशम [१]

[१] प्र॰ २१ चारित्रमोहनीय कर्म की प्रकृतियाँ कोन सी है ?
उ॰ ४ अप्रत्याखानावरणीय कषाय , ४ प्रत्याखानावरणीय कषाय , ४ संज्वलन कषाय , ९ नोकषाय

२१

तत्त्वार्थसूत्र

अध्याय २ सूत्र ४ - क्षायिकभाव

क्षायिकभाव की व्याख्या

आत्मा के पुरुषार्थ से किसी गुण की शुद्ध अवस्था का प्रगट होना, वह क्षायिकभाव है। यह भी जीव की एक समयमात्र की अवस्था है। एक-एक समय करके, वह सादि-अनन्त रहती है, तथापि एक समय में एक ही अवस्था होती है। सादि अनन्त-अमूर्त अतीन्द्रियस्वभाववाले केवलज्ञान-केवलदर्शन-केवलसुख-केवलवीर्य युक्त फलरूप अनन्त चतुष्टय के साथ रहनेवाली परम उत्कृष्ट क्षायिकभाव की शुद्धपरिणति, जो कार्यशुद्धपर्याय है, उसे क्षायिकभाव भी कहते हैं; और उसी समय आत्मा के पुरुषार्थ का निमित्त पाकर कर्मावरण का नाश होना, वह कर्म का क्षय है।

क्षायिकभाव के नौ भेद

ज्ञानदर्शनदानलाभभोगोपभोगवीर्याणि च ॥ ४ ॥

अर्थ – [ज्ञानदर्शनदानलाभभोगोपभोगवीर्याणि] केवलज्ञान, केवलदर्शन, क्षायिकदान, क्षायिकलाभ, क्षायिकभोग, क्षायिकउपभोग, क्षायिकवीर्य तथा [च] च कहने पर, क्षायिकसम्यक्त्व और क्षायिकचारित्र—इस प्रकार क्षायिकभाव के नौ भेद हैं।

क्षायिकभाव के नौ भेद

क्र॰	भाव	जीव के गुण	गुणस्थान/गुणस्थानातीत	कर्म
१॰	क्षायिक दर्शन	दर्शन	१३-१४ ओर सिद्ध दशा	दर्शनावरणीय कर्म का क्षय
२॰	क्षायिक ज्ञान	ज्ञान	१३-१४ ओर सिद्ध दशा	ज्ञानावरणीय कर्म का क्षय
३॰	क्षायिक सम्यक्त्व	श्रद्धा	४ से सिद्ध दशा तक	दर्शनमोहनीय की ३ ओर चारित्रमोहनीय की ४ = ७ प्रकृति का क्षय
४॰	क्षायिक चारित्र	चारित्र	१२ ,१३ ,१४ ओर सिद्ध दशा	चारित्रमोहनीय की २१ प्रकृति का क्षय
५॰	क्षायिक दान , लाभ , भोग , उपभोग , वीर्य	दान , लाभ , भोग , उपभोग , वीर्य	१३-१४ ओर सिद्ध दशा	अंतराय कर्म का क्षय

तत्त्वार्थसूत्र

अध्याय २ सूत्र ५ - क्षायोपशमिकभाव

क्षायोपशमिकभाव की व्याख्या

आत्मा के पुरुषार्थ का निमित्त पाकर, जो कर्म का स्वयं आँशिक क्षय और आँशिक उपशम, वह कर्म का क्षायोपशम है और क्षायोपशमिकभाव आत्मा की पर्याय है। यह भी आत्मा की एक समय की अवस्था है, वह उसकी योग्यता के अनुसार उत्कृष्ट काल तक भी रहती है, किन्तु प्रति समय बदलकर रहती है।

क्षायोपशमिकभाव के १८ भेद

ज्ञानाज्ञानदर्शनलब्ध्यश्चतुस्त्रित्रिपंचभेदाः

सम्यक्त्वचारित्रसंयमासंयमाश्च ॥ ५ ॥

क्षायोपशमिकभाव के १८ भेद

अर्थ - [ज्ञान अज्ञान] मति, श्रुत, अवधि और मनःपर्यय, यह चार ज्ञान; तथा कुमति, कुश्रुत और कुअवधि - ये तीन अज्ञान [दर्शन] चक्षु, अचक्षु और अवधि, ये तीन दर्शन [लब्धयः] क्षायोपशमिकदान, लाभ, भोग, उपभोग, वीर्य - ये पाँच लब्धियाँ [चतुःत्रि त्रिः भेदाः] इस प्रकार ४+३+३+५ = (१५) भेद तथा [सम्यक्त्व] क्षायोपशमिकसम्यक्त्व [चारित्र] क्षायोपशमिकचारित्र [च] और [संयमासंयमाः] संयमासंयम—इस प्रकार क्षायोपशमिकभाव के १८ भेद हैं।

क्षायोपशमिकभाव के १८ भेद

क्र॰	भाव	जीव के गुण	गुणस्थान	कर्म
१॰	३ दर्शन [चक्षु , अचक्षु , अवधि]	दर्शन	१-१२	दर्शनावरणीय कर्म का क्षयोपशम
२॰	३ अज्ञान [कुमति , कुश्रुत , कुअवधि]	ज्ञान	१ ,२ ,३	ज्ञानावरणीय कर्म का क्षयोपशम / दर्शनमोहनीय का उदय
३॰	४ ज्ञान [सुमति , सुश्रुत , सुअवधि , मन:पर्यायज्ञान-६-१२ गुणस्थान]	ज्ञान	४-१२	ज्ञानावरणीय कर्म का क्षयोपशम / ३ प्रकार के दर्शनमोहनीय ओर चारित्रमोहनीय का अनुदय

क्षायोपशमिकभाव के १८ भेद

क्र॰	भाव	जीव के गुण	गुणस्थान	कर्म
४॰	क्षायोपशमिक सम्यग्दर्शन	श्रद्धा	४-७	दर्शनमोहनीय ओर चारित्रमोहनीय का क्षयोपशम
५॰	क्षायोपशमिक चारित्र	चारित्र	६-१०	चारित्रमोहनीय कर्म का क्षयोपशम
६॰	संयमासंयम	चारित्र	५	चारित्रमोहनीय कर्म की अनंतानुबंधी ओर अप्रत्याख्यानावरणीय प्रकृति का अनुदय तथा प्रत्याख्यानावरणीय ओर संज्वलन प्रकृति का उदय
७॰	क्षायोपशमिक दान , लाभ , भोग , उपभोग , वीर्य	दान , लाभ , भोग , उपभोग , वीर्य	१-१२	अंतराय कर्मनो क्षयोपशम

तत्त्वार्थसूत्र

अध्याय २ सूत्र ६ - औदयिक भाव

औदयिकभाव की व्याख्या

कर्मों के निमित्त से आत्मा अपने में जो विकारभाव करता है, वह औदयिकभाव है। यह भी आत्मा की एक समय की अवस्था है।

औदयिकभाव के २१ भेद

गतिकषायलिंगमिथ्यादर्शनाज्ञानासंयतासिद्धलेश्या-

चतुश्चतुस्त्र्येकैकैकषड्भेदाः ॥ ६ ॥

औदयिकभाव के २१ भेद

अर्थ - [गति] तिर्यञ्च, नरक, मनुष्य और देव, यह चार गतियाँ; [कषाय] क्रोध, मान, माया, लोभ, यह चार कषाएँ; [लिंग] स्त्रीवेद, पुरुषवेद और नपुंसकवेद, यह तीन लिङ्ग; [मिथ्यादर्शन] मिथ्यादर्शन [अज्ञान] अज्ञान [असंयत] असंयम [असिद्ध] असिद्धत्व तथा [लेश्याः] कृष्ण, नील, कापोत, पीत पद्म और शुक्ल, यह छह लेश्याएँ—इस प्रकार [चतुः चतुः त्रि एक एक एक एक षड्भेदाः] ४+४+३+१+१+१+१+६ (२१) इस प्रकार सब मिलाकर औदयिकभाव के २१ भेद हैं।

औदयिकभाव के २१ भेद

क्र॰	भाव	जीव के गुण	गुणस्थान	कर्म
१॰	४ कषाय [क्रोध , मान , माया , लोभ]	चारित्र	१-१०	चारित्रमोहनीय कर्म का उदय निमित्त है।
२॰	४ गति	-	-	गतिनाम कर्म का उदय निमित्त है।
	देव व नरक		१-४	
	तिर्यंच		१-५	
	मनुष्य		१-१४	
३॰	३ वेद [स्त्रीवेद , पुरुषवेद , नपुसंकवेद]	चारित्र	१-९ गुणस्थान तक। पश्चात् अपगत वेदी कहलाते है।	चारित्रमोहनीय कर्म की नोकषाय प्रकृति का उदय निमित्त है।

औदयिकभाव के २१ भेद

क्र॰	भाव	जीव के गुण	गुणस्थान	कर्म
४॰	६ लेश्या [कृष्ण , नील , कापोत , पीत , पद्म , शुक्ल]	योग/चारित्र	१-१३ कषाय: १-१० योग : १-१३	चारित्रमोहनीय ओर शरीर नाम कर्म का उदय निमित्त है।
५॰	मिथ्यात्व	श्रद्धा	१	दर्शनमोहनीय का उदय निमित्त है।
६॰	औदयिक अज्ञान	ज्ञान	१-१२	ज्ञानावरणीय कर्म का उदय निमित्त है।
७॰	असंयम	चारित्र	१-४	चारित्रमोहनीय कर्म का उदय निमित्त है।
८॰	असिद्धत्व	-	१-१४	४ अघाति कर्म की शेष प्रकृति का उदय निमित्त है।

तत्त्वार्थसूत्र

अध्याय २ सूत्र ७ - पारिणामिक भाव

पारिणामिकभाव की व्याख्या

'पारिणामिक' का अर्थ है सहजस्वभाव; उत्पाद-व्यय-रहित ध्रुव-एकरूप स्थिर रहनेवाला भाव, पारिणामिकभाव है। पारिणामिकभाव सभी जीवों के सामान्य होता है। औदयिक, औपशमिक, क्षायोपशमिक और क्षायिक—इन चार भावों से रहित जो भाव है, वह पारिणामिकभाव है। जिसका निरन्तर सद्भाव रहता है, उसे पारिणामिकभाव कहते हैं। मतिज्ञानादि तथा केवलज्ञानादि जो अवस्थाएँ हैं, वे पारिणामिकभाव नहीं हैं।

पारिणामिकभाव के तीन भेद

जीवभव्याभव्यत्वानि च ॥ ७ ॥

अर्थ - [जीवभव्याभव्यत्वानि च] जीवत्व, भव्यत्व और अभव्यत्व — इस प्रकार पारिणामिकभाव के तीन भेद हैं।

पारिणामिकभाव के तीन भेद

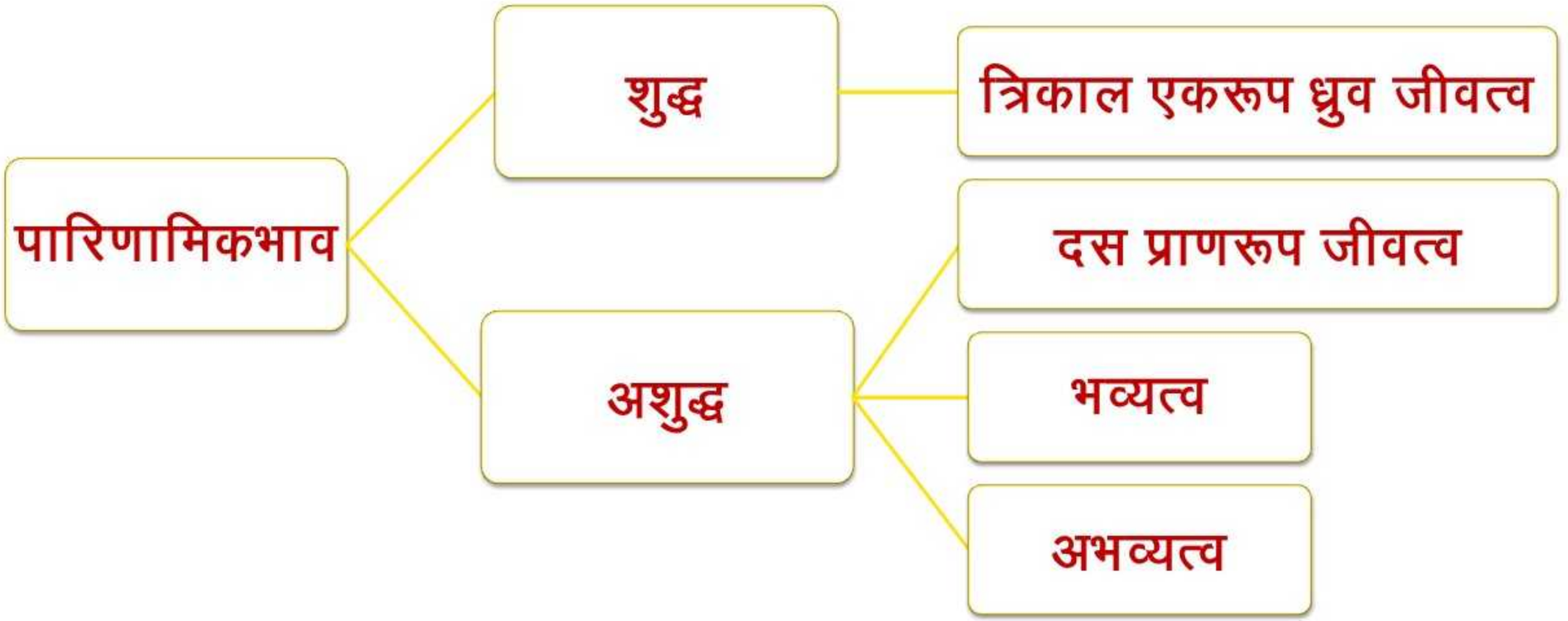

सहर्ष आभार

मोक्षशास्त्र की पाठशाला के प्रेरणास्तोत्र एवं सहयोगी

- वीतरागी देव-शास्त्र-गुरु, पू॰ गुरुदेवश्री आदि ज्ञानी धर्मात्मा
- आदरणीय समस्त सहयोगी विद्वानगण
- श्री सीमन्धरस्वामी दि॰ जिनमंदिर, विले पार्ला के समस्त ट्रस्टीगण एवं मुमुक्षुगण
- श्री दि॰ जैन स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट, सोनगढ़
- श्री कुन्दकुन्द-कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
- **www.vitragvani.com**

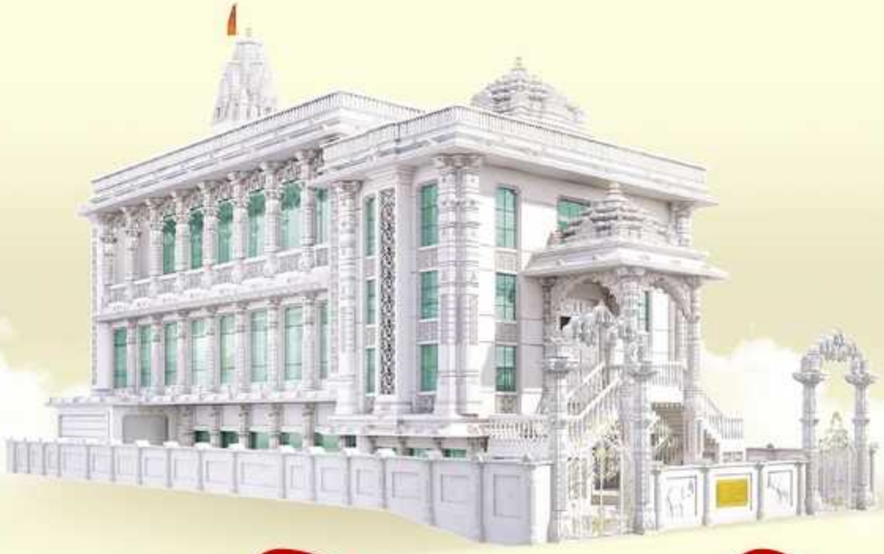

द्वितीय आध्यात्मिक महिला शिविर

महा सुद ८, वीर सं॰ २५४६; ०२-०२-२०२०